

# Shri Dilip RAUT - Vedic Astrologer & Spiritual Guide

Vedic Astrology Courses - Consultation - Pooja Vidhi and Specialise Remedies for Graha Dosha

Email: [dilipr@bhaktidhara.com](mailto:dilipr@bhaktidhara.com)

Mobile / Whats App - +91 9322890481

Shri Dilip RAUT - Vedic Astrologer & Spiritual Guide



॥ श्री हनुमान वडवानल् स्तोत्रम् ॥

॥ श्री हनुमान वडवानल् स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः

ॐ अस्य श्री हनुमद्वडवानलस्तोत्रमन्त्रस्य । श्री रामचन्द्र ऋषिः श्री वडवानलहनुमानदेवता,  
मम् समस्त रोग प्रशमनार्थं, आयुः आरोग्य ऐश्वर्य अभिवृध्यर्थं,  
समस्त पापक्षयार्थं, सीतारामचन्द्रप्रित्यर्थं च  
हनुमद्वडवानलस्तोत्रजपमहं करिष्ये ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्री महाहनुमते  
प्रकटपराक्रम सकल दिग्मङ्गल्य यशोवितान धवलिकृत  
जगत्त्रितय वज्रदेह रुद्रावतार लङ्कापुरीदहन उमाअमलमन्त्र उदधिबन्धन  
दशशिरःकृतान्तक सीताश्वसन् वायुपुत्र अञ्जनिगर्भसंभूत  
श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर् कपिसैन्यप्राकार सुग्रीवसाहय रणपर्वतोत्पाटण्  
कुमारब्रह्मचरिण् गंभिरनाद सर्वपापग्रहवारण सर्वोच्चरोचाटण डाकिनीविध्वंसन ॥

Shri Dilip RAUT - Vedic Astrologer & Spiritual Guide

ॐ हां ह्रीं ॐ नमो भगवते महावीरवीराय सर्वदुखनिवारणाय  
ग्रहमण्डल सर्वभूतमण्डल सर्वपिशाच्यमण्डल उच्चाटण  
भूत ज्वर एकहिक् ज्वर द्वहिक् ज्वर त्राहिकज्वर चातुर्थिकज्वर संतापज्वर  
माहेश्वर वैष्णवज्वरान छिन्धि छिन्धि  
यक्ष ब्रह्मराक्षस भूत प्रेत पिशाच्चाण् उच्चाटय् उच्चाटय् ॥

ॐ हां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्री महाहनुमते  
ॐ हां ह्रीं हूं हैं ह्रीं हः आं हां हां हां औं सौं एहि एहि एहि  
ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ नमो भगवते श्री महाहनुमते  
श्रवणचक्षुभूतानां शाकिणीडाकिणीनां विषम् दुष्टानां  
सर्वविषम् हर हर आकाश भुवनम् भेदय भेदय छेदय छेदय मारय मारय  
शोषय शोषय मोहय मोहय ज्वालय ज्वालय प्रहारय प्रहारय  
सकलमायां भेदय भेदय ॥

## Shri Dilip RAUT - Vedic Astrologer & Spiritual Guide

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्री महाहनुमते सर्व ग्रहोच्चाटण  
परबलं क्षोभय क्षोभय सकल बन्धन मोक्षणम् कुरु कुरु  
शिरः शूल गुल्म शूल सर्व शूलन्निर्मूलय निर्मूलय  
नागपाश अनन्त वासुकी तक्षक कर्कोटक कालियान  
यक्षकुल जलगत बिलगत रात्रिचर दिवाचर  
सर्वान्निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा ॥

राजभय चोरभय परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्र परविद्या छेदय् छेदय्  
स्वमन्त्र स्वयन्त्र स्वतन्त्र स्वविद्या प्रकटय् प्रकटय्  
सर्व अरिष्ठ नाशय नाशय सर्व शत्रु नाशय नाशय  
असाध्यं साधय साधय हुं फ़ट् स्वाहा ॥

॥ इति श्री विभिषणकृतम् हनुमद् वडवानल स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥